



1003



Saroj

1001

1002

1003

1004

1005

1006

सत्य सत्यमेवैश्वरो लोके तत्रैव धर्मः सत्यविक्रमः ।
सत्यमुच्यते सत्यविक्रि सत्यविक्रमेन परं धनम् ॥
धूमं मूर्ध्नि पालय नौरं संशय कीर्तिकं भूयः
अनादौ देवीं पुण्यं का अद्यापि तथा सर्वगुणमयी सो ।
नारायणो तुम्हें नमस्कार है ।



1001



1002



1003



1004



1005



1006